ISSN 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | April - 2016

Golden Research Thoughts

21वीं शताब्दी में मूल्य शिक्षा की आवश्यकतायें

Manoj Kumar
Department of Education Research Scholar,
Rani Durgavati Vishwavidhyalaya , Jabalpur (M.P).

सार संक्षेप

आज के मानव का व्यक्तित्व खंडित व्यक्तित्व है। उसमें उदारता, सहयोग, धैर्य और त्याग नहीं है। आज की शिक्षा एटम ;अणु की शिक्षा है, आतम ;आत्मा की नहीं। आज की शिक्षा में अहंकार का पोषण है, देह–अभिमान है।मान–शान, धन–सत्ता के पीछे दौड़ है जिसमें चारित्रिक गुणों का कोई स्थान नहीं है। इस के लिए उदारमना, आत्मस्थ व्यक्तिओं को चिंतन कर अविलम्ब समाधान ढूँढना है। मूल्य शिक्षा व्यक्तित्व को निखारती है। आंतरिक सशक्तिकरण कर इच्छाओं को कम करके उपभोक्तावाद की आँधी को समाप्त करती है। जीवन की पूर्णता का अर्थ है–भौतिक, मानसिक,सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की संपंनतापूर्ण समन्विति। 21वीं शताब्दी में स्वर्णिम भारत की उदय की आधार शीला ऐसी ही मूल्य शिक्षा है। मूल्य शिक्षा की अवहेलना करना भयंकर आपदा को निमंत्रण देने जैसा है। अगर मूल्य शिक्षा के लिए अभी उचित कदम नहीं उठाये गए तो जल्दी ही सभ्य समाज जंगल के कानून द्वारा संचालित किये जाएँगे। मूल्य शिक्षा से आज के छात्रों तथा शिक्षकों को व्यसनों से होने वाली हानियों को प्रभावशाली ढंग से बताया जा सकता है तथा तनावपूर्ण होते हुए भी उसके प्रभाव से मुक्त जीवन व्यतीत करना भी सिखाया जा सकता है।

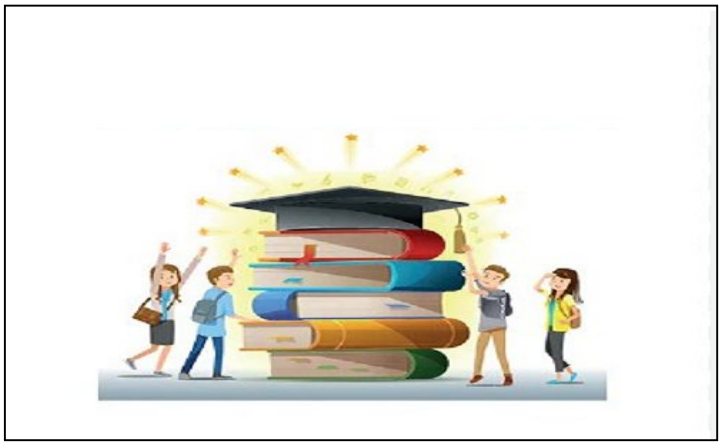

प्रस्तावना

मूल्य परक शिक्षा की अवधारण अपेक्षाकृत अधुनिक एवं व्यापक है मूल्य शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें हमारे नैतिक , समाजिक,सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक मूल्य समाहित हो। मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता न सिर्फ मानव सभ्यता के केंद्र हैं बल्कि मनुष्यों द्वारा निर्मित अपने सभी वैध प्रतिष्ठानों तथा उनके नैतिक दर्शनों के भी केंद्र हैं। साम्प्रत समय शिक्षा क्षेत्र में मूल्य शिक्षा की महती आवश्यकता है। समय तीव्र गति के साथ मानव की भौतिक जगत् की उड़ान उँचाइयाँ छू रही हैं, परन्तु उनकी आन्तरिक शक्तियाँ विस्मृत के गर्भ में जा रही हैं। अतः आज का मानव परिवेश है एवं दिशा शून्य बनता जा रहा है बाह्य व्यक्तित्व बोध एवं भौतिक विकास के आन्तरिक शक्तियों के विषय में

उसकी सोच और खोज कुंठित होती जा रही है। सांप्रतिक संसार मानवीय मूल्यों की कमी के कारण अत्यन्त गंभीर संकट की स्थिति से गति होने के स्पष्ट लक्षण परिलक्षित हो रहे हैं। पुनश्च मानव के पास अध्यात्म के विषय में सम्यक् अवबोध भी नहीं है जिससे वह अपना सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास साधित कर सके क्योंकि अध्यात्म ही मूल्यों को संवर्धित करने का एकमात्रा सशक्त साधन है। प्राचीन काल की शिक्षा परंपरा में मूल्यों को समंवित कर आचार्य शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे, परन्तु वर्तमान समय में मूल्य शिक्षा के प्रति इतनी गंभीर अवहेलना प्रदर्शित की गई है कि उभरते छात्रा व शिक्षक दोनों में चारित्रिक कलुषता स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रही है। एतत्सहित समाज में भी इसी मूल्य शिक्षा भावजन्य चारित्रिक स्खलन के कारण अनेकानेक समस्याएँ दिन–प्रतिदिन दिखाई दे रही हैं। प्रस्तुत लेख के माध्यम से मूल्य शिक्षा के प्रति ध्यान आकर्षत कराने हेतु कुछ विचार प्रकट किये गए हैं जो अधुनिक समाज के लिए अत्यन्त प्रासंगिक व युक्तिसंगत प्रतीत हो रहे हैं तथा जिससे समाज को एक समाज को एक संतुलित व सुव्यवस्थित आयाम प्रदान करने की एक दृष्टि प्राप्त हो सके। शिक्षा जगत् समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष की आधार शिला है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा का लक्ष्य ही है चरित्र निर्माण। आज तक के सभी शिक्षा आयोगों ने भी मूल्य शिक्षा को अनिवार्यता से स्वीकार किया है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी शर्त माना था। कवींद्र रवींद्रनाथ और डॉ. राधावृफष्ण ने भी घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विनाश का कारण बनेंगी। आज यही संघटित हो रहा है सत्य, प्रेम तथा अच्छाई के मार्ग की बाधाओं को पार करने का सामर्थ्य एक मात्र विषुद्ध आध्यात्मिकता से संपंन मूल्यनिष्ठ जीवन ही प्रदान कर सकता है आज विषुद्ध आध्यात्मिकता को समझने और आत्मसात करने की शक्ति , तैयारी और समय प्रायः दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है, क्योंकि आज का मानव आत्मा और षरीर का संबंध और उसकी सार्थकता को नहीं समझ पा रहा है। इसी कारण लक्ष्य विहिनता है, अज्ञान जनित भौतिक दौड़ की आँधी में अनीति, भ्रष्टाचार एवं नैतिक चारित्रिक पतन के चक्रवाह में वास्तविक जीवनधारा चुकती जा रही है। आज की शिक्षा जीवन के डाल पात से शरीर व शरीर के संबंधों तक सीमित है। प्रकृति के तत्वों में भी अपनी नैसर्गिक गरिमा–सौन्दर्य है–फूल में सुगंध, कोमलता, स्निग्धता, रंग और सौन्दर्य है। मानव का सौंदर्य खो गया है। कारण पाश्चात्य सभ्यता और दूषित वातावरण का प्रभाव है। आज की शिक्षा में प्रतियोगिता है, द्वेष है, भय है। अतः आज के मानव का व्यक्तित्व खंडित व्यक्तित्व है। उसमें उदारता, सहयोग, धैर्य और त्याग नहीं है। आज की शिक्षा एटम ;अणु की शिक्षा है, आतम ;आत्मा की नहीं। आज की शिक्षा में अहंकार का पोषण है, देह–अभिमान है।मान–शान, धन–सत्ता के पीछे दौड़ है जिसमें चारित्रिक गुणों का कोई स्थान नहीं है। इस के लिए उदारमना, आत्मस्थ व्यक्तिओं को चिंतन कर अविलम्ब समाधान ढूँढना है। जीवन की पूर्णता का अर्थ है–भौतिक, मानसिक,सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की संपंनतापूर्ण समन्विति। 21वीं शताब्दी में स्वर्णिम भारत की उदय की आधार शीला ऐसी ही मूल्य शिक्षा है। आज की शिक्षा मानव मूल्यों को छोड़, सब कुछ दे रही है। मूल्य नहीं तो मानवता नहीं, चरित्र नहीं, मानव की आन और शान नहीं। कोई भी राष्ट्र जनबल और धनबल से महान नहीं बनता। उसके लिए चरित्रबल ही चाहिए। इसी के अभाव में आज व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पूर्ण रूपेण विकसित,सुखी, समृद्ध नहीं हो पा रहे हैं। व्यक्ति और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन मूल्यों और चरित्रा की सुवास फैलानी है, समग्र राष्ट्र और विश्व में नई चेतना, नया विश्वास, नई आशा और नई उम्मीदों को लहलहाती फसलें तैयार करनी है, तो आज शिक्षा के क्षेत्रों को ही आगे आ कर आत्मवाद और परमात्मवाद से निष्पन्न जीवन मूल्यों की प्रयोगशालाएँ सर्वत्र खोलनी पड़ेंगीं।

मूल्य शिक्षा की अवधारणा

(क) 'मूल्य शिक्षा ' धर्म एवं दर्शन के उद्देश्य का प्रतिबिंबित करते हैं–जिनका लक्ष्य है लोगोंको बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शनदेना। मूल्य जीवन की सुंदरता एवं वरदानहैं। ये सभ्यता के आवश्यक तत्त्व तथा हमारे चरित्र के द्योतक हैं। हमारी श्रेष्ठ नैतिकता का निर्धारण मूल्यों के द्वारा ही होता है।

(ख) 'मूल्य शिक्षा ' जीवन की अमूल्य निधि है जो हमें संपंन बनाते हैं। इनसे आत्मा–परमात्मा के निकट आने के योग्य बन जाती है और जीवन वास्तविक तथा सार्थक बन जाता है। मूल्य हमें निर्बंधन तथा स्वावलंबी बनाते हैं एवं बाहरी समस्याओं से हमारी रक्षा करते हैं।

(ग) 'मूल्य शिक्षा ' मनुष्य के सिद्धाँत अथवा व्यवहार के स्तर हैं। जीवन में क्या महत्त्वपूर्ण है इस बारे में मनुष्य का निर्णय 'मूल्य' कहलाता है। मूल्य शिक्षा जीवन में स्वतः लागू किये गए नियम अथवा वे आचार संहिताएँ हैं जो जीवन यात्राा को स्वच्छ विवेक को स्वच्छ विवके के साथ संपंन करने लिए लागू किये जातेहैं। सभी श्रेष्ठ मूल्य (सत्यता, प्रेम, सहयोग, शांति, दया, विनम्रता इत्यादि) हमारे मन, विचारों एवं आध्यात्मिक स्वरूप में निहित होते हैं, न कि हमारे भौतिक स्वरूप में।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता के संदर्भ में निम्नलिखित कुछ महानुभावों के प्रमुख विचार–

(क) मूल्य शिक्षा की अवहेलना करना भयंकर आपदा को निमंत्रण देने जैसा है। अगर मूल्य शिक्षा के लिए अभी उचित कदम नहीं उठाये गए तो जल्दी ही सभ्य समाज जंगल के कानून द्वारा संचालित किये जाएँगे। (ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र हसीजा)

(ख) आज के इस कौतूक भरे कंप्यूटर संसार में रहते हुए भी जीवन को उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक बनाने के लिए हमें आध्यात्मिक मूल्यों को फिर से धारण करना अति आवश्यक है। (डॉ. के. चिदानंद गौड़ा)

(ग) संपूर्ण संसार मूल्यों के ह्रास के भयंकर दौर से गुजर रहा है। घातक हथियारों, नशीले पदार्थों एवं देह व्यापार जैसे तीन प्रकार के व्यापारों जैसे तीन प्रकार के व्यापारों ने समाज की गति को रोक लिया है। यह एक अत्यंत ही हानिकारक स्थिति है। मूल्य ह्रास की इस स्थिति से निकलने के लिए वर्तमान पीढ़ी को आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है। (मोहम्मद बशीर)

शिक्षा आयोगों एवं समितियों के निष्कर्ष

आज पूरा विश्व मूल्यों के भयंकर संकट के दौर से गुजर रहा है। आजादी के बाद से ही सरकार ने कई प्रकार वेफ आयोगों एवं समितियों का गठन शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए किया। इन आयोगों एवं समितियों ने सत्य, शांति, प्रेम, न्याय एवं सहयोग जैसे वैश्विक मूल्यों एवं मानवीय मूल्यों को जीवन में धारण करने की बात कही है। यूनेस्को(संयुक्त राष्ट्र का शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) ने जैक्यूस डेलोर्स की अध्यक्षता में अंतर्राष्ट्रीय आयोग का गठन किया। इस आयोग में पूरी दुनियाँ के शिक्षाशास्त्रियों को शामिल किया। डेलोर्स की रिपोर्ट ने शिक्षा के 4 स्तम्भों की जानकारी दी–

(क) जानने के लिए शिक्षा
(ख) करने के लिए शिक्षा
(ग) बनने के लिए शिक्षा
(घ) एक साथ जीने के लिए शिक्षा

प्रथम के लिए शैक्षणिक योग्यता आवश्यक है। द्वितीय के लिए कार्यकुशलता आवश्यक है। जबकि तृतीय एवं चतुर्थ के लिए मूल्य शिक्षा की अवधारणा आवश्यक है। निम्नोक्त कुछ मुख्य कारण हैं जिनके लिए मूल्य शिक्षा की महति आवश्यकता है–

- भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्य,
- मूल्यविहीन विज्ञान एवं तकनीकि,
- हिंसा का बढ़भ्ता प्रयोग,
- मादक द्रव्यों का बढ़ता हुआ प्रयोग,
- प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर मूल्य शिक्षा का अभाव,
- लोक कथाओं द्वारा अपमूल्यन।

मूल्य शिक्षा का प्रभाव

व्यक्तिगत प्रभाव

मूल्य शिक्षा व्यक्तित्व को निखारती है। आंतरिक सशक्तिकरण कर इच्छाओं को कम करके उपभोक्तावाद की आँधी को समाप्त करती है। परिणामस्वरूप मूल्यनिष्ठ जीवनशैली की सरलता के कारण वह अत्यधिक खर्च करने से बच जाता है और अनुचित एवं बेईमानी से अपने आय के स्त्रोतों को

बढ़ाने का प्रलोभन भी उस मन में घर नहीं कर पाता। एक ईमानदारी व्यक्ति अंदर और बाहर एक समान ही होता है जिससे उसका एक उज्ज्वल चरित्र समाज में प्रतिष्ठित होता है एवं वह सभी का प्रिय पात्र बनता है।

सामाजिक प्रभाव

संचार के विभिन्न चैनलों द्वारा प्रसारित मूल्य शिक्षा यह दावा करती है कि उसने हर उम्र के लोगों एवं समाज के प्रत्येक समूहों को इस शिक्षा वेफ माध्यम से इतना जागरूक एवं कुशल बना दिया है कि वे गलत कार्यों में संलग्न होने के किसी भी दबाव का मुकाबला कर सकते हैं। जब हर स्तर की शिक्षा में मूल्य शिक्षा का समावेश कर दिया जाता है और स्त्राी एवं पुरुष को समान रूप से दिया जाता है तो लोगों को यह सभ्य नागरिक जीवन जीने के योग्य बना देती है, तब मूल्यों को जीवन में धारण करने वाले व्यक्ति सामाजिक जीवन व्यवस्था में अधिक गहराई तक प्रविष्ट कुप्रवृत्तियों, भ्रष्टाचार, घूसखोरी तथा भाई–भतिजावाद जैसी बुराईयों, महिलाओं, बच्चों एवं पिछड़ी जाति के लोगों के साथ होने वाले भेदभावों को समाप्त करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। ऐसी श्रेष्ठ वृत्तियों वेफ कारण समाज के सर्वाधिक विपन्न लोगों के भी आत्मसम्मान जागृत हो जायेंगे और वे अपनी प्रतिष्ठा तथा स्वमान की रक्षा कर सकेंगे।

ऐसी स्थिति में लोग मूल्यों के प्रति स्वाभाविक रूप से संवेदनशील बनते हैं तथा वे सहज ढंग से पर्यावरण की रक्षा के लिए तत्पर भी होते हैं। मूल्य शिक्षा मनुष्य के अंदर मूल्यों के अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। मूल्य शिक्षा लोगों को आन्तरिक रूप से इतनी शक्तिशाली बना देती है कि वे मन, वचन एवं कर्म से लालच, स्वार्थ एवं हिंसा की भावना का प्रतिकार करने में समर्थ हो जाते हैं। मूल्य शिक्षा के बेहतर प्रसारण की व्यवस्था द्वारा लोगों को जुआ, विभिन्न व्यसनों एवं ड्रग्स के प्रयोग के खतरों की जानकारी दी जा सकती है। मानवीय, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से संपन्न समाज प्रबुद्ध एवं संवेदनशील लोगों को भी मूल्य की शिक्षा द्वारा प्रेरित किया जा सकता है।

शिक्षा में मूल्य

मूल्यों के बिना कोई भी शैक्षणिक संस्थान अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकता है। हर उम्र के विद्यार्थियों को मूल्यों की शिक्षा उनके विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल सामग्रियों, विद्यालय की नीतियों एवं कार्यक्रमों द्वारा प्रदान करना आवश्यक है। मूल्य रहित शिक्षा जैसी कोई चीज नहीं होती है। विद्यालय प्रतिदिन मूल्यों की शिक्षा देते हैं परंत प्रश्न है कि किन मूल्यों की? भारत में शिक्षा भिन्न–भिन्न काल में अनेक धार्मिक एवं राजनीतिक सत्ताओं के प्रभाव में रही है। ये प्रभावशाली प्राधिकार हैं–हिन्दू, इस्लाम,बौद्ध, जैन तथा ईसाई धर्म, अँग्रेजी उपनिवेशवाद, बुद्धिजीवी एवं इतिहासकार आदि। इन सभी ने अपने आदर्शों एवं मूल्यों को स्थापित करने का प्रयत्न करने का प्रयत्न किया। इन सभी का उद्देश्य था कि वे अपने मूल्यों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ। इन विभिन्न प्रभावशाली सत्ताओं के कारण ही आज भारतवर्ष बहु–संस्कृति प्रधान समाज बन गया है।

21वीं सदी के प्रारम्भ में आज दुनियाँ में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रभावशाली सत्ताएँ हैं। सूचना तकनीकी में विशिष्ट ज्ञान के आधार पर भारत वर्ष आज दुनियाँ के नक्शे पर अपनी अलग पहचान बनाने के पथ पर निरंतर अग्रसर है। भारतवर्ष के विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों के साइबर अभियांत्रिकी के कुशाग्र एवं प्रतिभाशाली अभियन्ता भारत को एक नई पहचान दे रहें हैं। तथापि भौतिकता आधारित इस तकनीकी प्रगति को ही मानवीय तथा वैश्विक मूल्यों के पतन का जिम्मेवार भी माना जा रहा है। अगर तकनीकी एवं मूल्यों के विकास के बीच कोई संबंध स्थापित होता तो हम पाते कि इस देश में मूल्यों की धारणा के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण विकास हो रहा है, किन्तु ऐसी स्थिति नहीं है। भौतिकवाद के उदय के साथ–साथ हम देख रहे हैं कि दुश्चिंताओं एवं असंतोष में वृद्धि खुशियों की अपेक्षा अत्यन्त तीव्र गति से हो रही है। अहंकार, क्रोध, हिंसा तथा पतनोंमुख शिक्षा का तेजी से प्रसार हो रहा है। मानव के सर्वांगीण वकास की कीमत पर आज की शिक्षा लोगों को आपसी प्रतिस्पर्धा के लिए ही प्रेरित कर रही है। शिक्षा का पहला कर्तव्य है ज्ञान की खोज एवं उसका प्रसार करना। परन्तु शिक्षा ऐसी हो जो विधि–विधान की जानकारी प्राप्त कराए तथा युवाओं के संवाद संप्रेषण की क्षमता का इस प्रकार विकास करे कि वे तेजी से बदल रहे इस प्रतियोगितावादी एवं परिवर्तनशील दुनियाँ के लायक स्वयं को

बना सकें। शिक्षा जीवन की एक अनिवार्य संपत्ति है क्योंकि यह शांति, स्वतंत्रता व न्याय दिलाती है। यह गरीबी, अज्ञानता, अत्याचार, यद्धु एवं शोषण को समाप्त करने वाली शक्तियों में प्रमुख शक्ति है

मूल्य शिक्षा का लक्ष्य

(क) मावन जीवन में परिवर्तन लाना।
(ख) सर्वांगीण विकास हो (शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक केवल 3-R (Reading, Writing and Recitation) की शिक्षा नहीं

मानसिक व्यक्तित्व विकास

नकारात्मक संकल्पों को सकारात्मक संकल्पों में, व्यर्थ संकल्पों को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करना ही मानसिक व्यक्तित्व विकास है। आजकल की शिक्षा प्रणाली में स्मरण शक्तिवर्धन को ही मानसिक व्यक्तित्व विकास समझा जाता है। मानसिक व्यक्तित्व विकास के लिए वास्तव में एकाग्रता, मौन, ध्यान व योग की आवश्यकता होती है। मन को प्रशांत करना अनिवार्य है। मानसिक व्यक्तित्व विकास होने से व्यक्ति संतुष्ट रहेगा, प्रतिकूल परिस्थितियों का, विरोधों का समर्थ रीति से सामना करेगा, नवीनता को अपनाएगा।

भावनात्मक व्यक्तित्व विकास

जो विचार इंद्रियों के द्वारा व्यक्त करते हैं, उसे भावना कहते हैं। उदाहरण–खुशी, शांति, आनंद, क्रोध, द्वेष इत्यादि। हम भावनाओं को तौल नहीं सकते हैं, केवल महसूस कर सकते हैं। आज मानवीय संबंधों में विश्वास, सहयोग, सद्भावना, स्नेह नहीं रहा है। व्यक्ति स्व–उन्नति को भूलता जा रहा है। कमजोरियों का निर्मूलन करने के लिए कमजोरियों की महसूसता, परिवर्तन की विधि चाहिए। तब सहज ही हमारा दुर्व्यवहार सद्व्यवहार में बदल जाएगा। विश्व में भाईचारा और एकता स्थापित होगी।

बौद्धिक व्यक्तित्व विकास

वर्तमान शिक्षा से व्यक्ति में नकारात्मकता और विनाशकारी शक्तियाँ आ रही हैं। मानवकुल का नाश करने के लिए आण्विक अस्त्रों–शस्त्रों के निर्माण में व्यक्ति व्यस्त है। लेकिन इतिहास साक्षी है कि जब–जब मानव ने शस्त्रों का सहारा लिया है, तब–तब रक्तरंजित क्रांति हुई है। फिर अणु अस्त्रों का निर्माण ही क्यों? व्यक्ति बुद्धिमान होते हुए भी स्वयं विनाश की तैयारियाँ कर रहा है। वास्तव में बुद्धि का विकास सकारात्मक होना चाहिए तथा सृजनात्मक, श्रेष्ठ समाज वेफ लिए नवनिर्माण में होना चाहिए।

निष्कर्ष

साम्प्रत समय शिक्षा क्षेत्रा में मूल्य शिक्षा की महती आवश्यकता है। समय तीव्र गति के साथ मानव की भौतिक जगत् की उड़ान उँचाइयाँ छू रही हैं, परन्तु उनकी आन्तरिक शक्तियाँ विस्मृत के गर्भ में जा रही हैं। अतः आज का मानव परवश है एवं दिशाशून्य बनता जा रहा है बाह्य व्यक्तित्वबोध एवं भौतिक विकास के आन्तरिक शक्तियों के विषय में उसकी सोच और खोज कुंठित होती जा रही है। वर्तमान शिक्षा भौतिक विकास एवं धनोपार्जन पर मुख्य रूप से केंद्रित है एवं इसके कारण ही समाज में इन दिनों मानवीय मूल्यों एवं नैतिक मूल्यों का सर्वत्र पतन दिखाई दे रहा है। इसके परिणामस्वरूप यह अवधारणा प्रचलित हो रही है कि मानवीय व नैतिक मूल्यों की शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु मूल्य एवं आध्यातमिक शिक्षा हमारे व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाती है। मूल्यों की शिक्षा को जब पाठ्यव्रफम में शामिल कर लिया जाता है तब एक विशिष्ट आदर्श व मूल्यसंपन्न नागरिक जीवन निर्माण करने का मार्ग प्रशक्त हो जाता है एवं यह सर्वथा उपयुक्त ही है। क्योंकि शिक्षण काल में ही छात्र हर प्रकार की शिक्षा सीखकर जीवन बनाने की दिशा प्राप्त कर लेता है। पुनश्च आध्यात्मिक ज्ञान से भौतिक शिक्षा की परिसीमा एवं परिणाम सर्वदा न्यायोचित व सुखकर हो जाता है तथा एक वैश्विक दृष्टिकोण की प्राप्ति हो जाती है। सामान्यतया ऐसा सोचा जाता है कि मूल्य शिक्षा की आवश्यकता मात्रा बच्चों को ही है। परन्तु भौतिकवाद एवं अहम् की भावना युवाओं में नकारात्मक प्रवृत्तियों को जन्म दे रही है।

इसलिए युवाओं को विशेषतः जो विद्यालय/ महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं अनिवार्य/वैकल्पिक रूप से मूल्य शिक्षा दिए जाने की सख्त आवश्यकता है। शिक्षकों को भी अपने आदर्श व्यक्तित्व को निखारने का यही सशक्त माध्यम या साधन है। नेतृत्व आत्मसंयम, मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करना, नैतिक व आध्यात्मिक सुधार के उदाहरण प्रस्तुत करना आज की आवश्यकता है। मूल्य शिक्षा से आज के छात्रों तथा शिक्षकों को व्यसनों से होने वाली हानियों को प्रभावशाली ढंग से बताया जा सकता है तथा तनावपूर्ण होते हुए भी उसके प्रभाव से मुक्त जीवन व्यतीत करना भी सिखाया जा सकता है।

अतः छात्रों को मूल्यनिष्ठ जीवन से संबंधित अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त हों तो वे स्वयं एक सम्माजनक स्थिति को अंगीकार कर अध्ययन या अन्य उपयोगी कार्य करना पसंद करेंगें। विश्व की सारी समस्याएँ तब समाप्त हो सकती हैं जब हम व्यक्तिगत स्तर पर सुधारने की कोशिश करेंगे क्योंकि विश्व की सभी समस्याएँ व्यक्तिगत समस्याओं का ही एक वृहद् आकार है। इसी उद्देश्य को चरितार्थ करने हेतु मूल्य शिक्षा व अध्यात्म को छात्रों व शिक्षकों के समक्ष उपस्थापित करना सर्वथा श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. DHULL, I. ANDKHATRI, N. 2002. *Effects of value clarification on moral reasoning of children in relation of parental attitude*. Journal of Value Education, 2(2), 119-129.
2. MATHUR, K. ANDBHADORIA, D. 2001. *Individualistic and collective value orientations among adolescents*. Journal of Value Education1(2). 110-122.
3. PETER, K. 2003. *Value rhythms: little experiences mighty armour*, Journal of Value Education3(1), 80-94.

Manoj Kumar
Department of Education Research Scholar, Rani Durgavati Vishwavidhyalaya , Jabalpur (M.P).